11

भजन

भजन सुगम प्रकार की रचनायें होती हैं जो सामान्यतया सभा के अंत में भक्ति भावना सहित गाई जाती हैं। ये पदम, जवाली आदि जैसी अन्य सुगम संगीत रचनाओं से भिन्न हैं। ये रचनायें विषय के साथ ही साथ राग और ताल की दृष्टि से अधिक सरल होती हैं। भजनों की रचनायें सामान्यतया सिंधुभैरवी, देश, बिहाग इत्यादि जैसी देश्य रागों में समकालीन रचयिताओं द्वारा रचित होती हैं। यह आवश्यक नहीं कि सभी भजनों का संगीत रचयिता द्वारा स्वयं दिया गया हो। कई भजनों में संगीत बाद के संगीतज्ञों द्वारा बाद में जोड़ा गया है। इस श्रेणी में मीरा, कबीर, सूरदास एवं अन्य के भजन सम्मिलित है।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पश्चात, विद्यार्थी

- संगीत की अद्भुत मेलडी का वर्णन कर पायेगा;
- सरल साहित्य और मधुर संगीत का वर्णन कर पायेगा;
- सूचिबद्ध भजन का ताल सहित उच्चारण कर पायेगा।

राग लक्षणं

रागं : कानडा

22वें मेल खरहरप्रिय जन्य

आरोहनं- स रि$_2$ ग$_1$ म$_1$ प ध$_2$ नि$_1$ सं

अवरोहनं- सं नि$_1$ प म$_1$ प ग$_1$, म$_1$ रि$_2$ स

टिप्पणी

जातिः वक्र षाडव

वादीः रि

संवादीः ध

संचारं

रि स रि प ग, , , रि ,ग म, पम ग ग म रि, रि स नि स नि धनि ध स रि प ग,,
मध,ध, मधनिसं प, निनिपम गमधनि, , स, , , स, रि, ग, , , म, रि, , स, ,
निरिंसंनि धनि,ध,मध,नि,रिंसंप,, मध,नि,प,मप,ग,,,गम,रि,रिसनिस,निधनि,ध,नि,,,स,,,

रचना का साहित्य

पल्लवी

अलय पायुदे कन्न एन मनमिह
अलय पायुदे उन आनंद मोहन वेणुगानमदिल

अनुपल्लवी

निलय पेय्य रादु सिलै पोलवे निन्द्रै
नेरमावतरियमले मिक विनोदमक मुरलीधर एन मानं

चरणं

तेलिंत निलवु पत्तपगल पोल एरियदु
दिक्कै नोक्कि एन इरु पुरुवं नेरियुदे
कनिंद उन वेनु गानं कात्रिल वरुकुदे
कंगल सोरुगी ओरु विधमै वरुकुदे

मध्यम कला साहित्यं

कादित मनत्तिल ओरुति पदत्तै एनक्कु अलिल्तु मगिज़्तव
ओरु तनित्त वनत्तिल अनैतु एनक्कु उनर्ची कोदुतु मगिज़्तव
अलैकदल अलैयिनिल कतिरवन इनैयिना कलयेन
कदरि मनमुरुगि नान असैक्कवो इदैमदरुद नी कलिक्कवो
इतु तगुमो इतु मुरैयो इतु धरमं तानो
कुसलुतिदं पोसुतदिदं कुसैगल पोलवे मानतु वेदनै मिकवोदु

टिप्पणी

रागं : कानडा

तालं : आदि

रचयिता: ओत्तुकदु व्यंकट सुबेर

पल्लवी

1) ‖ x 1 2 3 | x v | x v ‖
ऩिसरि,, प , पमग ,,,ग, | गमपरि,, रि,,, | ;गम, रिस , ‖
अलय पायुदे -- का | कन्न -- एन | मनमिह

‖ x 1 2 3 | x v | x v ‖
ऩि स , . ध,, ऩि, स,,,, ,,,,,, | ,,,, ,,,, | ,,,, ,,,, ‖
अ लय पा यु दे

2) अलयपायुदे कन्न एन मनमिह

‖ ऩिस, ध़,,ऩि, स,,,,, प, | सं , सं सं प, पप मनिप ग , म रि स ‖
अ लय पा यु दे उन आनंद मोहन वे वेणु गा नमदिल

3) ‖ निस, रि, नि , , निनिपमग;;| ध ,| ध , , निरिसप , | ; गम, रिस,
अल|य पायुदे - - कन्न एनमनमिह|

‖ निस,ध,,नि, सं,,,, , सं रिं | रिंमंरिंसं निनिनिप|मनिपग, मरिस‖
अ|लय पा यु दे उन - आ- नंदमोहन वेणुगानमदिल‖

अनुपल्लवी

1) x 1 2 3 x v x v
॥ ,, गम, ध नि , स,,,,, सं,,, सं सं, सं सं , सं , , नि रिं सं प ,
निलयपेय्य रा दु सिलै पोलवे नि-न्द्रै

2) x 1 2 3 x v x v
॥ ,, ग म , ध नि , सं रिं गं , रिं , सं ,,, ग म , रि स , स ,, नि रि स प ,
निलयपेय्यरा --- दु सिलैपोलवे वे - निन्द्रै

॥ ग, मधं , निससनिरिसप , पपम । ध नि स प, प प म । निधपमगमरिस ॥
ने रमाव तरि य - म लेमिकवि नो-दमकमुर । ली - धर एन -मानं

टिप्पणी

चरणं

॥ , , ध नि, प प , प , प , , म प , । म प , प,,म, । प , नि ध प म ग, ॥
ते लिंत निल वु पत्त पगल पोल ए रि य दु – –

ध नि , सं , प , प , --वही-- --वही-- पमग

॥ ,, ते लिंत निलवु पत्त पगल पोल । प ,निध रिय- दु – ॥ रिय- दु –

॥ ग,ग, मपरिरि, स,,निस, । रि रि, रि, , स , । रि , नि ध प म ग , , , ॥
दि क्कै नो – क्कि एन इरु पुरुवं ने रियु – दे –

॥ , , ग म , ध नि , स , , , स , स , । , , स , , स स , / सनिरिसप,,, ॥
कनिंद उन वे नु गा नंकात्रिलव रु – कु – दे

॥ , , ग म , ध नि , स रि ग , रि , स , । , , गम,रिस,सनिरिसप,,, ॥
कनिंद उन वे – – नु गानं का – त्रिलव रु–कु– दे

॥ ध,, ध, , म , ध, ध , , ध ध , । नि स , प , , म, प, । निधपमग,,, ॥
कं गल सोरुगी ओरु विध मैव रु कु – दे –

मध्यमकलां

॥ सस , सपप , पमम , मधध , धमध , नि सं नि , प म ध , नि सं, नि सं ॥
कादित मनत्तिल ओरुति पदत्तै एनक्कु अलिल्तु मगिज्त्तव ओरु

॥ गग, मरि स , स नि रि , स नि प , प म ध , नि स नि , पमनि,पग,,, ॥
तनित्त वनत्तिल अनैतु एनक्कु उनर्ची कोदुतु मगिज्त्तव

॥ ससससपपपम मममधधधध मधधनिसनिपममध , नि सं , , , ॥
अलैकदल अलैयिनिल कतिरवन इनैयिना कलयेन कलित्तव

॥ संरिरिंसंरिरिरिरिरिं , संरिं, पंगं , गंगंमं रिं , रिं सं सं नि , ध नि , रि स , ॥
कदरि मनमुरुगि नान असैक्कवो इदैमदरुद नी –कलिक्कवो

॥ मगमधध,,, मधनिसंसं ,,, रिं रिं सं रिं रिं , रिं सं रिं पं गं , , , गं गं ॥
इ तु तगुमो इतुमुरैयो इतुधरमंता – – नो कुस

॥ गं मं रिं सं , सं सं सं नि रि स प , पपपमधनिस, निपपनिनिपमग म रि स ॥
लु – तिदंपोसुत – दिदं कुसैगल पो – लवेमानतु वे–दनै मिकवोदु

पाठगत प्रश्न

1. कानडा किस मेल की जन्य राग है?
2. 'अलय पायुदे' भजन के रचयिता कौन हैं?
3. यह भजन किस भाषा में है?

निर्देशित कार्यकलाप

1. भजन की स्वर लिपि के आधार पर राग कानडा के संचार को स्वयं लिखें।
2. प्रत्यक्ष संगीत सभाओं, रडियोधटी वी कार्यक्रम, सी डीध कसेट के माध्यम से इस राग की अधिक से अधिक रचनायें एकत्र करें।